स्रोत विज्ञान एवं टेक्नॉलॉजी फीचर्स

RNI REG. NO: MPHIN/2007/20200

सर सी. वी. रमन

नोबल पुरस्कार से सम्मानित भारतीय भौतिक शास्त्री सर चंद्रशेखर वेंकट रमन का जन्म 1888 में हुआ था। शुरुआती शिक्षा आंध्र प्रदेश व तमिल नाडु में पूरी करने के बाद रमन इंडियन फायनेंस विभाग में सहायक महालेखाकार नियुक्त हुए थे। मगर 1917 में इस नौकरी से इस्तीफा देकर वे कोलकाता विश्वविद्यालय में भौतिकी के पालित प्रोफेसर बने। इसी के साथ वे इंडियन एसोसिएशन फॉर कल्टीवेशन ऑफ साइन्स में शोध कार्य भी करते रहे।

प्रकाश के बिखराव यानी स्केटरिंग पर किए गए अपने प्रयोगों के आधार पर 28 फरवरी 1928 के दिन उन्होंने रमन प्रभाव की खोज की थी। इसे भारत में विज्ञान दिवस के रूप में मनाया जाता है। अत्यंत सस्ते उपकरणों की मदद से वे यह दर्शा पाने में सफल रहे थे कि जब प्रकाश सूक्ष्म कणों से टकराता है तो उसका क्या होता है। उनकी इस खोज ने पदार्थ की क्वांटम प्रकृति को पुष्ट किया था। इसी खोज के लिए उन्हें 1930 में नोबल पुरस्कार प्रदान किया गया था।

रमन ने प्रकाश के व्यवहार पर और भी कई महत्वपूर्ण प्रयोग किए थे। उन्होंने हीरे, मोती जैसे रत्नों के प्रकाशीय व्यवहार का सघन अध्ययन भी किया था।

उनके शोध का एक अन्य महत्वपूर्ण क्षेत्र ध्वनि से सम्बंधित था। इसके अंतर्गत उन्होंने वाद्य यंत्रों के ध्वनि गुणों का अध्ययन किया और तबले व मृदंगम की ध्वनियों के हार्मोनिक गुणों पर प्रकाश डाला।

1943 में उन्होंने ट्रावनकोर केमिकल एण्ड मेन्यूफेक्चरिंग कंपनी की स्थापना भी की थी।

कई सम्मानों से नवाज़े गए रमन को 1947 में आज़ादी मिलने के बाद प्रथम राष्ट्रीय प्रोफेसर नियुक्त किया गया। वे इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइन्स के निदेशक भी रहे। 1948 में यहां से सेवा निवृत्त होने के बाद उन्होंने बैंगलोर में ही रमन रिसर्च इंस्टीट्यूट की स्थापना की थी जो आज भी एक महत्वपूर्ण शोध संस्थान है। सन 1970 में 82 वर्ष की आयु में निधन तक वे इस संस्थान के निदेशक रहे।

प्रकाशक, मुद्रक सी.एन. सुब्रह्मण्यम की ओर से निदेशक एकलव्य फाउण्डेशन द्वारा एकलव्य, ई-10 शंकर नगर, बी.डी.ए. कॉलोनी, शिवाजी नगर, भोपाल - 462016 (म.प्र.) से प्रकाशित तथा आदर्श प्राइवेट लिमिटेड, इंदिरा प्रेस कॉम्पलेक्स, एम.पी. नगर, ज़ोन-1 भोपाल (म.प्र.) 462 011 से मुद्रित। सम्पादकः डॉ. सुशील जोशी